Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

04

महाकवि तुलसी के शैक्षिक दर्शन में निहित आध्यात्मिक मूल्यों व पर्यावरण शिक्षा का अध्ययन

रानी ओझा
शोधार्थी

डॉ. जितेन्द्र कुमार तिवारी
मार्गदर्शक

डॉ. सावित्री सिंगवाल
सहमार्गदर्शिका

प्रस्तावना –

शिक्षा दर्शन शैक्षिक क्षेत्र के गहनतर समस्याओं का सम्पूर्ण अध्ययन करता है और शिक्षा विज्ञान के लिए उन समस्याओं का अध्ययन छोड़ देता है जो तात्कालिक है और जिनका सर्वोत्कृष्ट अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया जा सकता है, जैसे छात्रों की सम्पन्नता या योग्यता के मापन की समस्या आदि। विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं के सिद्धान्तों का प्रयोग करके वह शिक्षा की समस्याओं की खोज करने के लिए मार्गदर्शन ग्रहण करता है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन का कार्य शुद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित संघों एवं सिद्धान्तों को शैक्षिक प्रकिया के संचालन में प्रयोग करना है।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

''पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जिसका उद्देश्य ऐसी विश्व जनसंख्या का विकास करना है तो पर्यावरण तथा इससे जुड़ी हुई समस्याओं के प्रति चिन्तित एवं जागरूक हो तथा जिसे वर्तमान समस्याओं के निदान एवं नवीन समस्याओं को रोकने हेतु व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से कार्य करने का ज्ञान कौशल, दृष्टिकोण, प्रेरणा एवं वचनबद्धता हो।''

अक्टूबर 1977 में सोवियत रूस के टिनलिर्स नगर में आयोजित पर्यावरण शिक्षा पर अन्तःशासकीय सम्मेलन में पर्यावरण शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया गया :–

पर्यावरण शिक्षा प्राकृतिक एवं निर्मित पर्यावरणों की उस जटिल प्रकृति को व्यक्तियों तथा समुदायों को समझाना है जो उनके जैविक, भौतिक सामाजिक, आर्थिक एवं सामाजिक पक्षों की अन्तःक्रिया से उत्पन्न होती है तथा सामाजिक समस्याओं के निदाने तथा पर्यावरण की गुणवत्ता के प्रबंधन के लिये ज्ञान, मूल, दृष्टिकोण एवं व्यवहारिक कुशलता प्रदान करती है।''

समस्या कथन

''तुलसी के शैक्षिक दर्शन में निहित आध्यात्मिक मूल्यों व पर्यावरण शिक्षा का अध्ययन–रामचरितमानस के सन्दर्भ में''

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया गया है।

1. तुलसी के शैक्षिक दर्शन में निहित आध्यात्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. तुलसी के शैक्षिक दर्शन में निहित पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित मूल्यों का अध्ययन करना।
3. तुलसी के शैक्षिक दर्शन में निहित आध्यात्मिक मूल्यों और पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी तथ्यों पर प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षाविदो से प्रत्यक्षीकरण करना।
4. तुलसी के शैक्षिक दर्शन में निहित आध्यात्मिक मूल्यों और पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी तथ्यों का रामचरितमानस के विशेष संदर्भ में मूल्यांकन करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में तुलसी कृत रामचरितमानस का दार्शनिक सर्वेक्षण युक्त अध्ययन किया गया। जिसमें रामचरितमान में निहित आध्यात्मिक मूल्यों व पर्यावरण शिक्षा पर प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षाविद्ों के विचार जानने के लिए यादृच्छिक पद्धति द्वारा न्यादर्शों का चयन किया गया है।

शोध प्रविधि

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

प्रस्तुत शोध में शिक्षाविदों के प्रत्यक्षीकरण हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं प्रशिक्षणार्थियों के प्रत्यक्षीकरण हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रतिशतता प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग किया गया है।

1. साक्षात्कार अनुसूची – प्राचार्य (शिक्षाविदों) के लिए
2. अभिमतावली – प्राध्यापकों के लिए
3. प्रश्नावली – प्रशिक्षणार्थियों के लिए

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध को गोस्वामी तुलसी कृत महाकाव्य रामचरितमानस में वर्णित आध्यात्मिक मूल्यों व पर्यावरण शिक्षा तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध को मध्य प्रदेश राज्य के शिवपुरी जिले तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध को शिवपुरी जिले के दस शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
4. प्रस्तुत शोध को शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य, प्राध्यापकों एवं प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित रखा गया है।

न्यादर्श चयन

1. प्रस्तुत शोध में मध्य प्रदेश राज्य के शिवपुरी जिले के दस शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का यादृच्छिक पद्धति द्वारा चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में प्रत्येक संस्थान के प्राचार्य को एवं 30 प्राध्यापकों का शिक्षाविदो के रूप में चयन किया गया है। प्राध्यापकों में उन शिक्षाविदों को लिया गया जो हिन्दी, संस्कृत शिक्षण एवं पर्यावरण विषय का अध्यापन कार्य करते हैं।
3. प्रस्तुत शोध में 500 बी.एड. प्रशिक्षार्थियों का चयन किया गया है।

शोध निष्कर्ष–प्रशिक्षणार्थियों, प्राध्यापकों एवं शिक्षाविदो के अभिमतों से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है :–

1. तुलसीकृत रामचरितमानस आध्यात्मिक मूल्यों के विकास में सहायक है। रामचरितमानस जीवन के सभी पहलुओं पर दृष्टिपात करता है। अतः सर्वांगीण विकास में आध्यात्मिक मूल्यों के विकास को भी पोषण प्रदान करता है।
2. रामचरितमानस पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है। जन जागरूकता हेतु शैक्षिक व्याख्यान एवं विचार गोष्ठियों के आयोजन के साथ–साथ रामचरितमानस चर्चा की जानी चाहिए।
3. रामचरितमानस से सम्बन्धित विचारगोष्ठियों के साथ–साथ अन्य कार्यक्रम जैसे पोस्टर बनाना, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, नाटकों का आयोजन व शैक्षिक व्याख्यान के आयोजन पर सहमति जताई जिससे विद्यार्थियों में आध्यात्मिक मूल्य एवं पर्यावरण शिक्षा का सकारात्मक विकास हो सके।
4. रामचरितमानस में आध्यात्मिक ज्ञान एवं पर्यावरण शिक्षा के सूत्र बिखरे हुए है। बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड तक रामचरितमानस श्रेष्ठ जीवन दर्शन प्रस्तुत करता है। रामचरितमानस के आध्यात्मिक मूल्य आदर्श जीवन का आधार स्तम्भ है जो वर्तमान पीढ़ी की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।
5. रामचरितमानस किसी एक व्यक्ति अथवा एक युग की समस्या का समाधान नहीं करता अपितु सम्पूर्ण मानव जाति एवं चर चराचर जगत का कल्याण करने में सहायक है।
6. देश की वर्तमान गम्भीर समस्याओं पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो वर्तमान पीढ़ी में सबसे अधिक समस्या संस्कारों की कमी है। भौतिकवादी व पाश्चात्य विचारधारा मानवीय गुणों का

©Copyright 2024 ADRJ. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

विकास अवरोधित करती नजर आ रही है। ऐसे समय में न सिर्फ विद्याल अपितु परिवार एवं समाज को भी जागरूक होना होगा हमारे आध्यात्मिक ग्रन्थों में निहित शैक्षिक मूल्यों का अनुसरण करना होगा। क्योंकि मूल्यों का हनन सिर्फ एक पीढ़ी या परिवार की समस्या नहीं है अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र एवं विश्व को बाधित करती है।

7. रामचरितमानस में निहित आध्यात्मिक ज्ञान पर परिवार एवं विद्यालय स्तर पर चर्चा की जानी चाहिए। बालकों को श्रीराम के आदर्श एवं उनके जीवन की महत्वपूर्ण शिक्षाओं से परिचित कराना चाहिए।

उपसंहार

तुलसी का शैक्षिक दर्शन वर्तमान साधक संजीवनी है। जो कलयुग की प्रत्येक समस्या का अन्त करने में सहायक है। अतः इसे शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाने का विचार किया जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर एवं उच्च स्तर पर रामचरितमानस की शिक्षाओं का विशद वर्णन किया जाना अपेक्षित है। पाठ्यक्रम में बालक के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखते हुए रामचरितमानस जैसे महाकाव्यों की शिक्षाओं को शामिल करना प्रासंगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्त सुरेन्द्र दास (1972) : भारतीय दर्शन का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
2. जैन हीरा लाल (1975) : भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिसर।
3. नानेश आचार्य (1985) : विशेष के लिए द्रष्टव्य क्षमता दर्शन और व्यवहार, बीकानेर।
4. कमल के.एल. (1996) : गांधी चिन्तन जयपुर पब्लिशिंग, जयपुर।
5. सागर आचार्य सुनील (2005) : मानवता के आठ सूत्र, संस्कृति शोध संस्थान इन्दौर।
6. श्री कनक नन्दी (1996) : सर्वोदयी शिक्षा मानो विज्ञान, धर्म दर्शन सेवा संस्थान उदयपुर।
7. रायजादा, वी.एस. (1997). शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
8. रैना एम.के. 1999 एजेकेशनल रिसर्च अशीम प्रिन्टर्स दिल्ली।
9. शर्मा पी.डी. (1990) पारिस्थितिकी और पर्यावरण (रस्तोगी पब्लिकेशर्स मेरठ उ.प्र.)।
10. शर्मा आर.के. (2008) : एजेकेशनल रिसर्च इन्टरनेशनल प्रिन्टर्स टाइम दिल्ली।
11. शर्मा रामचन्द्र (1985) : प्रमाणिक हिन्दीकोष, लोक भारती प्रकाशन।
12. तुलसी आचार्य (1945) : आचार्य तुलसी का अमर संदेश, कोलकत्ता।

Survey Report

1. Indian Educational Abtract (1997). Vol-7, New Delhi : NCFTE-09
2. National Curriculum Framework Review (2005). Vol.-I, National Focus Groups, New Delhi : NCERT.
3. Dictionary of Education (1959). II Ed. New York : McGraw Hill Book Company Inc.
4. Buch, M.B. (1983-1988): Fourth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
5. Buch, M.B. (1988-1992): Fifth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
6. Buch, M.B. (1988-1992): Sixth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
7. National Education Policy 2019

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved